Importance and Impact on locke's Ideas.

Dr. Anjani Kumar Ghosh
Deptt. of Pol-Science
B.A.-III (Hons.)

जॉन लॉक एक उदारवादी विचारक था । अन्य विचारकों की तरह उसके चिंतन को भी उसकी परिस्थितियों ने प्रभावित किया । उन्हीं परिस्थितियों से प्रभावित होकर वह उदारवादी बना । उसके परिवार के उदारवादी और प्यूरिटनवादी वातावरण तथा उसके उदारवादी मित्रों ने उसके चिंतन को प्रभावित किया । पार्लियामेंट और राजा के बीच चलने वाले संघर्ष तथा ब्रिटेन की गौरवपूर्ण क्रांति ने भी इन्हें प्रभावित किया ।

पार्लियामेंट और राजा के बीच सत्ता के नाम पर चल रहे गृहयुद्ध में सत्ता के पक्षधरों की विजय हुई । इसके फलस्वरूप क्रॉमवेल की अध्यक्षता में ब्रिटेन में गणतंत्र की स्थापना हुई । 1658 में उसकी मृत्यु के पश्चात ब्रिटेन में राजतंत्र की स्थापना हुई तथा चार्ल्स द्वितीय सम्राट बना । इन सबका लीक के उदारवादी और सीमित शासन का समर्थक होने में महत्वपूर्ण योगदान है।

लॉक की असंगतियों के कारण यद्यपि उसके चिंतन में अस्पष्टता आ गई है फिर भी इससे राजनीतिक चिंतन के इतिहास में उसके प्रभाव को कम नहीं का जा सकता । अपनी महत्वपूर्ण देन के कारण उसका नाम राजदर्शन के इतिहास में अमर है । लॉक के विचारों को उसके जीवन काल में ही न केवल बहुत सम्मान मिला बल्कि भविष्य में भी दो शताब्दियों से अधिक समय तक यूरोप और अमेरिका के जन-मानस पर उनका प्रभाव छाया रहा ।

फ्राँस और अमेरिका की जन-क्रान्तियों तथा आन्दोलनों पर उसके विचारों का प्रभाव पड़ा । 1765-71 तथा अमेरिकन स्वतंत्रता के युद्ध नेता और सन् 1789 में फ्रांस की राज्य-क्रांति के प्रवर्तक लॉक द्वारा प्रदर्शित व्यक्तिगत स्वतंत्रता व्यक्तिगत सम्पत्ति, जनमत स्वीकृति, बहुमत-शासन, शक्ति-विभाजन के सिद्धांत आदि से प्रेरित होकर कार्य करते रहे ।

अमेरिका के संविधानवेत्ता लॉक की 'ट्रीटाइजेज' को बाइबिल की तरह पवित्र मानते रहे । उसके ये दोनों प्रशासन-निबन्ध अमेरिकन क्रांति के पाठ्यक्रम बन गए । अमेरिका की 'स्वतंत्रता की घोषणा' (Declaration of Independence) इसी महान् ग्रंथ का लगभग प्रतिलेख है । प्रजातान्त्रिक नीतिशास्त्र के प्रणयन में लॉक की गौरवपूर्ण विशिष्टता को भुलाया नहीं जा सकता ।

राजसत्ता सहमति पर ही आधारित रह सकती है, इस घोषणा द्वारा उसने साम्राज्यवाद और निरंकुश शासन-प्रणाली का प्रबल विरोध किया । बहुमत शासन का जितना सुन्दर पक्षपोषण उसने किया, उतना अन्य किसी भी लेखक ने नहीं । क्रांति के अधिकार का पोषण करके उसने समस्त एकतंत्रों को प्रत्यक्ष या अप्रत्यक्ष रूप से भारी चुनौती दी जिसे फिर रूसो ने और भी अधिक भावपूर्ण शब्दों में व्यक्त किया ।

सहिष्णुता का समर्थन करके लीक ने केवल उदारवाद की ही सूचना नहीं दी बल्कि यह भी बताया कि तत्कालीन युग में वैज्ञानिक अन्वेषणों के कारण परम्परागत धार्मिक विश्वासों के प्रति एक उपेक्षाभाव जाग रहा था । कार्यपालिका को व्यवस्थापिका के अधीन बनाकर सांविधानिक शासन-क्रिया के समर्थक के रूप में लीक हमारे सामने आया ।

सेबाइन के अनुसार – "उसकी प्रतिभा की विशेषता न तो विद्धता थी और न तर्क शक्ति, यह उसकी अतुलनीय सहज बुद्धि थी जिसके प्रयोग से उसने दर्शन, राजनीति, आचरण शास्त्र तथा शिक्षा के क्षेत्र में उन मुख्य विचारधाराओं का एक स्थान पर संग्रह किया, जिन्हें भूतकाल के अनुभव ने उसकी समकालीन पीढ़ी के जो अधिक ज्ञानवान थी, मस्तिष्क में उत्पन्न कर दिया था । उसने उनको एक सरल, गंभीर किन्तु हृदयग्राही भाषा में अभिव्यक्त करके 18वीं शताब्दी के लोगों के सम्मुख प्रस्तुत किया, जहाँ जाकर वे ऐसी सामग्री बने जिससे इंग्लैण्ड तथा यूरोप के राजदर्शन का विकास हुआ ।"

प्राकृतिक अधिकारों का सिद्धांत यद्यपि आज अमान्य ठहराया जा चुका है किन्तु प्रो. डनिंग के मतानुसार यह सिद्धांत राजदर्शन का लॉक की एक अति महत्वपूर्ण देन है । जीवन, स्वतंत्रता और सम्पत्ति को व्यक्ति के जन्मसिद्ध प्राकृतिक अधिकार मानते हुए उसने कहा कि राज्य का कर्तव्य उनकी रक्षा करना है और वह मनुष्य को इनसे वंचित नहीं कर सकता ।

आज सभी देशों के संविधानों में नागरिकों के मौलिक अधिकारों की रक्षा को प्रथम स्थान दिया जाता है । यह वर्तमान प्रजातंत्र और उदारवाद (Liberalism) की आधारशिला है । इसमें कोई संदेह नहीं कि लॉक ने अपने पूर्ववर्ती विचारकों की अपेक्षा प्राकृतिक अधिकारों की व्याख्या और उनके निरूपण में निश्चित प्रगति की ।

आर्थिक क्षेत्र में भी लॉक ने महत्त्वपूर्ण भूमिका अदा की है । सम्पत्ति के विषय में श्रम को जो महत्व उसने प्रदान किया उसका असर दो प्रकार का हुआ । एडम स्मिथ और रिकार्डो ने मूल्य के श्रम-मूलक सिद्धांत को पूँजीवाद के पोषण में और कार्ल मार्क्स ने श्रमिक वर्ग के हितों के अभिवर्द्धन में प्रयुक्त किया । लॉक के उदारवाद ने भी उसके प्रभाव को बढ़ाने में मदद की । हॉब्स ने मनुष्य को घोर स्वार्थी माना था किन्तु लीक ने मानव-स्वभाव में कर्त्तव्यशीलता, परमार्थ-वृत्ति और नैतिकता के लिए भी स्थान रखा ।

इस कारण तत्कालीन शिक्षित समाज उसके विचारों से विशेष प्रभावित हुआ । शिक्षा-शास्त्री के रूप में लॉक का महत्व सामने आया । शिक्षा को उसने चारित्रिक विकास के लिए आवश्यक माना और संस्कृति की प्राप्ति के लिए मातृभाषा द्वारा शिक्षा प्राप्ति को उचित ठहराया ।

लॉक ने व्यवस्थापिका, कार्यपालिका और न्यायपालिका शक्तियों के विभाजन (Separation of Powers) के सिद्धांत का बीजारोपण किया । पॉलिबियस के बाद लॉक ने ही इसका स्पष्ट और तर्कसंगत प्रतिपादन किया था । व्यक्ति की स्वतंत्रता को सुरक्षित रखने के रूप में इस सिद्धांत का प्रयोग करने वाला वह सम्भवत: सर्वप्रथम आधुनिक विचारक था ।

मॉन्टेस्क्यू ने इसी आधार पर अपने शक्ति-विभाजन तथा शासन सम्बन्धी कार्यों के त्रिवर्गीय विभाजन के सिद्धांत का विकास किया और अमेरिका के संविधान निर्माताओं ने लॉक एवं मॉन्टेस्क्यू के सिद्धांतों का अनुसरण करते हुए ही अपने विधान की रचना की ।